

जयपुर डायलॉग्स-2019 एकता ही हमारी संस्कृति की ताकत

—राज्यपाल

जयपुर, 19 अक्टूबर। राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा है कि एकता ही हमारी संस्कृति की ताकत है। “ विश्व हमारा है और हम विश्व के हैं ” इस विशालता का अनुभव भारत ने विश्व को कराने में सफलता हासिल की है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति का सार यही है कि सम्पूर्ण राष्ट्र के लोग आपस में जुड़े हुए हैं। भारतीयों ने भौगोलिक एकता और भावनात्मक एकात्मकता से आपसी सद्भाव और सकारात्मकता का वातावरण बनाया है। इससे राष्ट्र की विश्व में पहचान बनी है।

राज्यपाल श्री मिश्र शनिवार को प्रातः यहां होटल क्लार्क्स में जयपुर डायलॉग्स फोरम द्वारा आयोजित राष्ट्रीय नीति के सांस्कृतिक आधार विषयक जयपुर डायलॉग्स को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उपभोग में संयम, वितरण में समानता, प्रकृति से संतुलन व आपसी सद्भाव से ही राष्ट्र का विकास होता है, देश आगे बढ़ता है और यही पक्ष राष्ट्रीय नीति के लिए सांस्कृतिक आधार है।

राज्यपाल श्री मिश्र ने कहा कि पूरे देश को एक शरीर की भांति मानेंगे, तब ही संवेदनशीलता और एकाग्रता का भाव पैदा होगा तथा भेदभाव, जैसी बुराइयां दूर हो सकेंगी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पंडित दीनदयाल की सोच का आधार सांस्कृतिक था। आपसी सहयोग व सद्भाव ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। एक-दूसरे की कुशलता का ध्यान रखना, शौर्य बढ़ाना, ईर्ष्या मिटाना और प्रकृति का सम्मान करना भारतीयता है।

राज्यपाल ने कहा कि समाज में साथ चलने की सोच एकात्मकता है। हमें धैर्यवान, क्षमावान, चोरी न करने वाले, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने वाले, सात्विक प्रवृत्ति, बुद्धिमान, विद्यावान, विवेकशील और क्रोध न करने वाला बनना होगा। इससे आत्मिक अनुशासन की अनुभूति होती है। इस अनुभूति से ही हम पाप और पुण्य का अंतर समझ सकते हैं। श्री मिश्र ने कहा कि व्यक्ति का आचरण और व्यवहार नैतिकता है। नैतिकता के पालन से ही समाज आगे बढ़ेगा।

राज्यपाल ने कहा कि अठारह पुराणों में पुण्य और पाप दो ही वचन हैं। यदि हम परोपकार करेंगे तो पुण्य प्राप्त होगा और किसी को कष्ट देंगे तो पाप के भागीदार बनेंगे। श्री मिश्र ने कहा कि हमें उतना ही उपभोग करना है, जितना हमें आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक को समाज के लिए छोड़ देना चाहिए।

राज्यपाल श्री मिश्र ने कहा कि भारत ने अपने आचार-विचार से विश्व के लोगों का मन जीता है। कण-कण में शंकर है अर्थात् धरती पूज्य है। प्रकृति का सम्मान और विश्व बन्धुत्व की भावना हमारे राष्ट्र की पहचान है। लोक कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार किया जाना आवश्यक है। जनकल्याणकारी योजनाओं के स्वरूप पर चिंतन करना चाहिए। समारोह में राज्य सभा सांसद श्री सुंदाशु त्रिवेदी मौजूद थे। जयपुर डायलॉग्स फोरम के अध्यक्ष श्री संजय दीक्षित ने राज्यपाल श्री मिश्र को कृष्णा योगेश्वरा पुस्तक भेंट की। श्री सुनिल कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

डॉ. लोकेश चन्द्र शर्मा
सहायक निदेशक (जनसम्पर्क)
राज्यपाल, राजस्थान